हास्य-व्यंग्य के धुरंधर कवियों
की 100 से अधिक चुनिंदा रचनाएँ

रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन

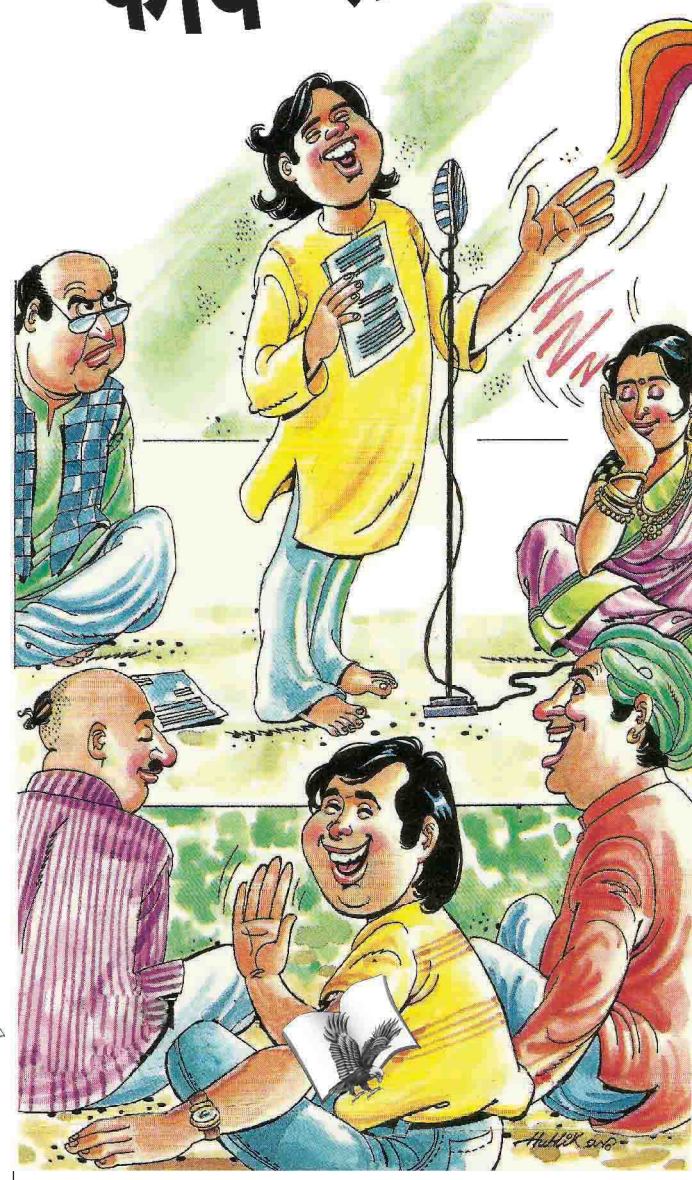

रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन

संयोजक
प्रेम किशोर 'पटाखा'
सह संयोजक
अशोक 'अंजुम'
कार्टूनिस्ट
जी.वै. हुबलीकर

V&S PUBLISHERS

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई
जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© कॉपीराइट: वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521515-0-9

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

आइए/मुस्कराइए

मौहल्ला से लेकर
विदेशों तक हल्ला मचाने वाले
प्रख्यात/सुविख्यात
ज्ञात/अज्ञात
हास्य कवियों से
कीजिए मुलाकात ।

○

यह माना कि इनमें
कुछ ग्रेट हैं
कुछ के गिरे हुए रेट हैं
कुछ के पिचके और
कुछ के निकले हुए पेट हैं
हास्यरस में सभी हैवी-वेट हैं।

○

तो आइए/मुस्कराइए
हास्य महासागर में
गोते लगाइए
हंसिए, हंसाइए । खिलखिलाइए
गुदगुदाइए/ठहाके लगाइए ।

–प्रेम किशोर 'पटाखा'

आमंत्रित कविगण

1. अशोक 'आनन' 7
2. अशोक 'अंजुम' 8
3. ओम् प्रकाश आदित्य 21
4. अरुण जैमिनी 25
5. अशोक चक्रधर 31
6. काका हाथरसी 40
7. गणेश सोनी 'प्रतीक' 44
8. चक्रधर शुक्ल 47
9. चकाचौंध ज्ञानपुरी 49
10. जैमिनी हरियाणवी 51
11. डण्डा लखनवी 54
12. डंठल 56
13. नवनीत 'हुल्लड़' 58
14. डॉ. परमेश्वर गोयल 60
15. प्रकाश 'प्रलय' 62
16. प्रभात 'प्रणय' 65
17. प्रेम किशोर 'पटाखा' 67
18. मनोहर 'मनोज' 72
19. डॉ. महरुद्दीन खां 74
20. माणिक मृगेश 76
21. मूलचन्द शर्मा 'नादान' 80
22. माणिक वर्मा 82
23. राजेन्द्र मालवीय 89
24. राजेन्द्र 'राजा' 91
25. घनश्याम अग्रवाल 95
26. कैलाश गौतम 97
27. लक्ष्मीदत्त 'तरुण' 99
28. विजय निर्बाध 102
29. डॉ. सरोजनी प्रीतम 104
30. साजन ग्वालियरी 108

31. डॉ. संत हास्यरसी 110
32. सुभाष काबरा 112
33. शंकर प्रसाद करगेती 115
34. सूर्य कुमार पाण्डेय 119
35. सुरेश 'नीरव' 125
36. शैल चतुर्वेदी 128
37. हुल्लड़ मुरादाबादी 134
38. हुड़दंग 139
39. जगन्नाथ विश्व 140
40. प्रभाकिरण जैन 143

अशोक 'आनन'

'सृजन' नया बाज़ार, मक्सी-465106, शाजापुर (म. प्र.)

सामयिक वंदना

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
जनता सारी भूखी मरे, मंत्री खाएं मेवा।।
कुर्सी के खेल में
अंधे भए नेता
वादों की नाव को
कोई नहीं खेता
मांझी के तेवर-हुए जानलेवा।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।।
एक नहीं, दो नहीं
सब भ्रष्टाचारी,
जुल्म इनके सह रही
जनता बेचारी,
गरीबन के खून से, ये करें कलेवा।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।।
प्यासन को लोटा देत
भूखन को थाली
चमुचन को मौका देत
औरन को गाली
चुनावन के टैम पै, करें देश-सेवा।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।।

अशोक 'अंजुम'

'संवेदना' एफ-23, नयी कालोनी, कासिमपुर (पा.हा.)
अलीगढ़-202127 (उ.प्र.)

पागलखाना बनाम...

मूड, मूड है
एक दिन पागलों को देखने के लिए
मचल पड़ा
और मैं
आगरा के पागलखाने की ओर निकल पड़ा

O O O

पागलखाने में मेरा एक यार
डॉ. एम.एम. मजूमदार
एक लम्बे अर्से से चिकित्सा अधिकारी है
मैंने उसे अपने आने का कारण बताया
वह मुस्कराया
बोला-''आओ!''

O O O

पागलों का बाड़ा
एक तरफ एक पागल
दूसरे की कमीज फाड़ रहा था
तो दूसरी तरफ
एक खींच रहा था दूसरे का नाड़ा।

O O O

मित्र बोला–
वह देखो,
उधर कोने में जो पागल
घण्टों से कुर्सी पर बैठा है
बात-बात पर
देश को बचाने की दलीलें देता है
यह पिछले आम चुनाव में
हारा हुआ नेता है
वोटों की मार से
बुरी तरह घायल है
–अब पागल है!

○ ○ ○

और यह...
यह जो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई
की आवाजें लगा रहा है
देखने में तो लगता है–
बड़ा भोला है
लेकिन सन् उन्नीस सौ सैंतालिस से
देश में साम्प्रदायिक दंगे करा रहा है
पिछले दंगे में
इसका अपना ही दामन
बुरी तरह से जल गया
और उसी के सदमे से

इसके दिमाग का
दिवालिया निकल गया

○ ○ ○

इधर आओ! इसे देखो!
ये जो गीली मिट्टी की
छोटी-छोटी गोलियां बना रहा है
और बार-बार, जबरदस्ती
दूसरे पागलों को खिला रहा है
शहर का मशहूर डॉक्टर है
एक दिन इसका इकलौता लड़का
इसी की दी हुई दवा से
राम को प्यारा हो गया
ऐसा मरा कि
इसके दिमाग की नैया ही डुबो गया।

○ ○ ○

इधर देखो!
ये जो हाथ-पैर हवा में फेंक रहा है
जोर-जोर से बेसुरा रेंक रहा है
ये...ये कवि है
दस वर्षों से दूसरों की कविताएं
मंचों पर सुनाता रहा
अर्थात् किसी और के चेक

अपने नाम से भुनाता रहा
एक दिन असली कवि ने पीट दिया
मंच पर ही घसीट दिया
उस दिन के बाद...
यह जब भी घर से निकलता
लोग इसकी हंसी उड़ाते
गली के कुत्ते इसके पीछे पड़ जाते
उड़ने-उड़ाने के चक्कर में
एक दिन इसका दिमाग ही उड़ गया
और यह यहां आकर
हमारे पागलखाने से जुड़ गया।

○ ○ ○

यहां आओ!
ये जो पानी में
रेत मिलाकर चाट रहा है
बार-बार दांतों से
मिट्टी के ढेले काट रहा है
इसका मतलब यह न समझना
कि इसे मिट्टी से बहुत अधिक प्यार है,
अरे ये तो इंजीनियरों के बल-बूते पर
फलने-फूलने वाला ठेकेदार है।
पिछले साल इसके द्वारा बनाया गया पुल
पेमेन्ट मिलने से पहले ही ढह गया,
और उसी में
इसका दिमाग भी 'बह' गया।
ये ठेकेदार क्या है, जैसे-
अपने देश के सैनिकों द्वारा
अपने ही देश पर दागी गई मिसाइल है
अरे, दूर हटो! दूर हटो!!
-पागल है!

○ ○ ○

इसे देखो!
ये अध्यापक है
इसने पर्चे आउट कराए

ऊंची रकम पर
बच्चे ट्यूशन पढ़ाए
परीक्षा में
संबंधियों के नम्बर बढ़ाए
पिछले दिनों एक छात्र
इसके ट्यूशन के पैसे पचा गया
एकलव्य की भांति अंगूठा तो न दे सका
लेकिन अंगूठा दिखा गया
परिणामस्वरूप–
ये यहां पागलखाने आ गया
देश के छात्र/छात्राएं
जहां आकर फंसते रहे–फंसते रहे
ये ऐसा दलदल है
अरे दूर रहो, छेड़ मत देना
क्या कहा–क्यों?
अरे भई पागल है!

○ ○ ○

उसे देखो!
वह जो बार–बार आंखें दिखा रहा है
सबसे ज्यादा हाथ–पैर चला रहा है
कभी–कभी औरों को काटने लगता है,
और अक्सर
उस मोटे वाले पागल को चाटने लगता है।
ये न समझना कि इसने
हद से ज्यादा तनाव भोगा है,
मिस्टर अंजुम, ये हमारे शहर का
छछूंदर ब्राण्ड दरोगा है।
पिछले दिनों एक चोर से डरकर भाग रहा था
रास्ते में ठोकर खा गया
इसका सिर एक पत्थर से टकरा गया
सिर के पत्थर से टकराते ही
इसका दिमाग पास के गड्ढे में सरक गया
और इसका परिवार
इसे यहां, पागलखाने में पटक गया।

○ ○ ○

और दोस्त!
आओ अब मैं तुम्हें
अन्तिम पागल के दर्शन करा दूं
और हां, यह इस पागलखाने का
सबसे मरियल और कमजोर पागल है
–यह भी बता दूं!
लेकिन फिर भी इसके हाथ-पैरों में
लोहे की जंजीर और कड़े हैं
वह देखो चार-चार कर्मचारी
इसकी निगरानी को खड़े हैं!
मैंने कहा–''यार!

सस्पेंस में मत डाल
ज्यादा मत सता
इस मरियल के लिए इतनी व्यवस्था
माजरा क्या है
जल्दी बता!''
वह बोला–''सुन!
इस पर सत्य बोलने के दौरे पड़ते हैं
इसके बोलने से
अच्छे-अच्छों के होश उड़ते हैं
दहेज, रिश्वत, बलात्कार आदि
समाज का कोई भी ऐब
इसे अत्यधिक कष्ट देता है

यह भ्रष्टाचार के अथाह सागर में
छेदों से भरी अपनी
आदर्शवाद की नाव खेता है
इस सतयुगी ने
घोर कलयुग में जन्म लिया है
बताओ ये सब आज के दौर में
पागलपन नहीं तो और क्या है?
पिछले दिनों–
एक मंत्री के साले को
इसने कत्ल करते देख लिया
अदालत में जब इसने
सही-सही किस्सा बयान किया
तो इसे दे दिया गया पागल करार
पहले तो पुलिस लॉकअप में खाई मार
अब यहां बिजली के झटके खाता है,
लेकिन आदमी बड़ा पक्का है
अपने इरादों से टल नहीं पाता है!''
मैंने भावुक होकर कहा–
''यार, तूने मेरे साथ इतना सब किया
इतना और कर दे
तो तेरा अहसान न भूलूं,
मैंने आज तक किसी सत्पुरुष को
नजदीक से नहीं देखा
यदि इससे नजदीक से मिलवा दे
तो इसके चरण छू लूं!''

○ ○ ○

उस दिन के बाद दोस्तों
जब कभी भी उस पागलखाने की
यात्रा याद आती है
तो ऐसा लगता है, जैसे–
उस दिन पागलखाने में
देश के कर्णधारों की दुकान देखकर आया था
अर्थात्...अर्थात् मात्र तीन घण्टे में
सारे जहां से अच्छा
अपना हिन्दुस्तान देखकर आया था।